International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 40 September - October - 2025

स्वतंत्रता संग्राम में बिरसा मुंडा का नेतृत्व
(‘धरती आबा’ नाटक के विशेष संदर्भ में)

प्रा. डॉ. मदन भाऊराव काळे
आर्ट्स कॉमर्स अ‍ॅण्ड सायन्स कॉलेज, पिंपळनेर, ता. जि. बीड.
Corresponding Author – प्रा. डॉ. मदन भाऊराव काळे
DOI - 10.5281/zenodo.17659591

सारांश :

साहित्य की विविध विधाओं में नाटक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाटककार केवल मनोरंजन का माध्यम प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि वे समाज, संस्कृति और इतिहास को रंगमंच के माध्यम से जीवंत बनाते हैं। हिंदी रंगमंच के इतिहास में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि समकालीन नाटककारों ने भारतीय परिवेश और जनजीवन को केंद्र में रखकर मानवीय संवेदनाओं का सशक्त चित्रण किया है। उन्होंने परंपरागत नाट्य शैलियों को नवीन रंग-शिल्प के साथ मिलाकर नाट्य-साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की है।

भारतीय इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि यहाँ अनेक ऐसे राष्ट्रीय व्यक्तित्व उभरे हैं, जिन्होंने अपने अदम्य साहस, संघर्षशीलता और सामाजिक चेतना के बल पर देश के इतिहास को गौरवमयी बनाया। इन्हीं में एक प्रमुख नाम बिरसा मुंडा का है। बिरसा मुंडा ने न केवल ब्रिटिश शासन का विरोध किया, बल्कि आदिवासी समाज को संगठित कर उनके अधिकारों, संस्कृति और अस्मिता की रक्षा के लिए एक व्यापक आंदोलन खड़ा किया। उनका मानना था कि मनुष्य का भय ही उसे गुलाम बनाता है, और इसलिए उन्होंने अंधविश्वास एवं कर्मकांडों से मुक्ति का मार्ग सुझाया।

हृषीकेश सुलभ द्वारा लिखित ‘धरती आबा’ नाटक बिरसा मुंडा के जीवन-संघर्षों पर आधारित एक ऐतिहासिक नाटक है। यह नाटक उन्हें आदिवासी समुदाय का ‘जननायक’ स्थापित करता है और साथ ही यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता का संग्राम केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि आदिवासी समाज के बीच भी उतनी ही गहराई से लड़ा गया। इस दृष्टि से ‘धरती आबा’ स्वतंत्रता-संघर्ष की जनपक्षीय चेतना और आदिवासी अस्मिता का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

संबोध शब्द: बिरसा मुंडा, धरती आबा, आदिवासी अस्मिता, जननायक, स्वतंत्रता संग्राम, आदिवासी आंदोलन, औपनिवेशिक शोषण, ऐतिहासिक नाटक, जनचेतना आदि।

प्रस्तावना :

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल १८५७ की क्रांति या बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय आंदोलनों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी जड़ें आदिवासी समाज के प्रतिरोध और संघर्ष में भी गहराई तक फैली हुई हैं। इन आदिवासी आंदोलनों में बिरसा मुंडा का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें सम्मानपूर्वक ‘धरती आबा’ कहा जाता है, जिसका अर्थ है धरती का पिता। बिरसा मुंडा ने न केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और शोषक जमींदार व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया, बल्कि आदिवासी अस्मिता, संस्कृति और भूमि अधिकारों की रक्षा के लिए भी संग्राम छेड़ा। उनके

नेतृत्व में छिड़ा मुंडा आंदोलन उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में औपनिवेशिक सत्ता को गहराई तक चुनौती देने वाला सशक्त अध्याय सिद्ध हुआ।

नाटक 'धरती आबा' में बिरसा मुंडा के जीवन, उनके संघर्ष और नेतृत्व को नाट्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह नाटक केवल ऐतिहासिक घटनाओं का पुनर्निर्माण नहीं करता, बल्कि आदिवासी समाज की पीड़ा, विद्रोही चेतना और स्वतंत्रता की आकांक्षा को सजीव करता है। बिरसा मुंडा का नेतृत्व यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता का संघर्ष केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, बल्कि स्थानीय और जनजातीय स्तर पर भी बराबरी से लड़ा गया। अतः 'धरती आबा' के माध्यम से बिरसा मुंडा के योगदान का अध्ययन स्वतंत्रता संग्राम की व्यापक और बहुआयामी समझ को समृद्ध करता है।

विषय प्रवेश :

साहित्य की अनेक विधाएँ हैं, कहानी, उपन्यास, कविता आदि, जिनमें नाटक एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। प्रायः पाठक कहानियाँ और कविताएँ केवल पढ़ते हैं, जबकि नाटक को पढ़ने के साथ-साथ देखने का अनुभव भी मिलता है। नाटक देखने के पश्चात् श्रोताओं से अक्सर प्रतिक्रियाएँ सुनने को मिलती हैं, "प्रस्तुति बहुत अच्छी थी", "आज नाटक प्रभावित नहीं कर सका", या "नाटक रंग लाया"। यह दर्शाता है कि नाटक केवल पठन की नहीं, बल्कि मंचन और प्रस्तुति की भी विधा है। इसी कारण नाटक को 'खेल' अथवा 'प्रस्तुति' भी कहा जाता है।

हृषीकेश सुलभ हिंदी साहित्य के समकालीन लेखकों और रंगकर्मियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। इनका जन्म १५ फरवरी, १९५५ को बिहार राज्य के लहेजी गाँव में हुआ। बचपन से ही उनका रुझान रंगमंच की ओर रहा और साहित्य-सृजन पर उनके पिताश्री के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। साहित्य लेखन के अतिरिक्त उन्होंने अनेक सांस्कृतिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं तथा कई भाषाओं में अनूदित भी की गई हैं। हृषीकेश सुलभ ने कहानी और लेखन के साथ-साथ नाटक लेखन में भी अपनी विशेष पहचान बनाई। उनके 'बटोही', 'अमली' और 'धरती आबा' नाटक विशेष रूप से चर्चित हुए हैं। उन्हें 'इंदु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान', 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान', 'अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान', 'रामवृक्ष बेनीपुरी सम्मान', 'पाटलिपुत्र पुरस्कार' एवं 'सिद्धार्थ कुमार स्मृति सम्मान' सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

हृषीकेश सुलभ का चर्चित नाटक 'धरती आबा' आदिवासी नायक बिरसा मुंडा के जीवन-संघर्षों पर आधारित है। ब्रिटिशकालीन भारत में अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों के कारण मुंडा आदिवासियों में गहरा असंतोष व्याप्त था। ऐसे समय में बिरसा मुंडा ने आदिवासियों में जागृति उत्पन्न कर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया। वे कर्मकांडों और अंधविश्वासों में विश्वास नहीं रखते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि मनुष्य का भय ही उसे गुलाम बनाता है।

'धरती आबा' नाटक में बिरसा मुंडा के जीवन का अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है। उनके पिता का नाम सुगना और माता का नाम करमी था। बिरसा के दो भाई थे, कोमता और कनु। नाटककार ने बिरसा के जीवन की घटनाओं को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। बिरसा केवल मुंडा समाज के ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय समाज के नायक माने जाते हैं। उन्होंने अपने कार्य और साहस से जनजातीय समुदाय के साथ-साथ अन्य वर्गों को भी प्रेरित किया और उनमें राष्ट्रप्रेम की भावना जगाई। कथावस्तु की प्रस्तुति में फ्लैशबैक

पद्धति का सशक्त प्रयोग किया गया है, जो नाटक को और भी प्रभावशाली बनाता है।

'धरती आबा' नाटक की शुरूआत गायन से होती है,

"तुम उगे सूर्य के जैसे चलकद में
तुम आँधी बनकर गरजे चलकद में
तीर-धनुष पास तुम्हारे
और पास कुल्हाडी
पाथर-माटी घास-फूस
तुम धूल-गर्द में खेले
तुम उगे सूर्य के जैसे चलकद में
नाचे पहाड नाचे नदिया
सब नाचें जंगल में
वंशी में तुम सास भरो जब
मंगल हो जंगल में
तुम उगे सूर्य के जैसे चलकद में।"[१]

नाटक के आरंभ में प्रतीकों के माध्यम से बिरसा मुंडा का प्राकट्य सूर्य के समान दर्शाया गया है। उनके आगमन से पूरा जंगल उल्लास और उत्सव से भर उठता है। मानो वृक्ष, नदियाँ और पर्वत तक आनंद में झूम रहे हों। सब ओर नृत्य और गीत का वातावरण है। बिरसा के हाथों में तीर-धनुष और कुल्हाड़ी दिखाई जाती है, जो उनके योद्धा रूप और रक्षक भाव को प्रकट करती है। वे केवल जनजाति के नहीं, बल्कि समस्त समुदाय के संरक्षक और मार्गदर्शक के रूप में उभरते हैं।

कथावस्तु को आगे बढ़ाने में बिरसा और धानी के संवाद प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इन संवादों से यह स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों ने किस प्रकार आदिवासियों के प्राकृतिक जीवन पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था। वे नदियों का जल लेने नहीं देते, मछली पकड़ने नहीं देते, यहाँ तक कि जंगल की लकड़ी काटने की भी मनाही कर दी गई थी। हर ओर उनका अधिकार था, और कुछ करना हो तो भारी लगान चुकाना पड़ता था। इस अन्याय और शोषण के विरुद्ध धानी से संवाद करते हुए बिरसा प्रश्न करता है—“लड़ाई क्यों आवश्यक है?” यही प्रश्न आगे जाकर विद्रोह और संघर्ष की दिशा तय करता है। धानी कहता है, "अपने लोगों के लिए। जंगल हमारे थे . . . नदियाँ हमारी थीं . . . धरती हमारी थी। दिकू आए, . . . जमींदार आए, . . . मिशन आया, . . . चर्च आया, . . . अंग्रेज आए, . . . सिपाही आए . . . कचहरी आई। सब पसरते गए और हम मुंडा लोग अपने पौर सिकोडते रहे।"[२]

बिरसा जान जाता है कि, संगठन के सिवाय अंग्रेजों से लडाई नहीं जीती जा सकती। बिरसा नेतृत्वकर आदिवासियों को एकत्रित कर समाज का संगठन करता है। इसलिए बिरसा कर्मकांड को छोड कर्म पर भरोसा करता है। अपनी माँ करमी को वह कहता है कि, "मैंने छोड दी ठाकुर की पूजा। अब मैं किसी की नहीं पूजनेवाला। न ठाकुर को और न तेरे सिंबोडा को।"[३]

बिरसा अपने समाज को अंधविश्वास और कर्मकांडों से ऊपर उठकर कर्म तथा यथार्थ जीवन पर विश्वास करने की प्रेरणा देता है। वह समझाता है कि मनुष्य का भय ही उसे पराधीन बनाता है। इसी संदर्भ में नाटक में चाल्की की कथा आती है। चाल्की वह स्त्री थी, जो गर्भवती रहते हुए भूख और अभाव के कारण पौधा रोपते समय ही मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। उसकी मृत्यु के उपरांत उसके साथ चाँदी की अंगूठी और कुछ पैसे रखकर उसे दफनाया गया। समाज में यह विश्वास प्रचलित था कि चाल्की का प्रेत वहाँ वास करता है। बिरसा इस अंधश्रद्धा को चुनौती देता है। वह चाल्की की कब्र से स्वयं उस चाँदी की अंगूठी निकाल लेता है और समाज को स्पष्ट करता है कि यह मात्र अंधविश्वास है, किसी प्रकार की अलौकिक शक्ति का अस्तित्व नहीं। इस प्रकार वह आदिवासी समाज को भ्रम और भय से मुक्त कर कर्म, साहस और वास्तविक जीवन मूल्यों की

ओर उन्मुख करता है। धीरे-धीरे बिरसा का यह विचार और साहसिक कार्य उसे जन-समाज में लोकप्रिय बना देता है और वह लोगों के बीच चेतना का प्रतीक बनकर उभरता है।

बिरसा के साहसिक कार्य और समाज के प्रति उनके समर्पण को देखकर एक दिन उनकी माता करमी उनसे कहती हैं, "मेरे आबा, पर वे तुझे जीवित नहीं छोड़ेंगे... मार डालेंगे... तुम्हें भगवान बनना पड़ेगा। वे तुम्हें बहुत दुख देंगे। दुख सहने के लिए भगवान बनना पड़ता है, मेरे आबा। इस धरती का आबा बनना पड़ेगा तुम्हें। बिना धरती का आबा बने, धरती की लाज कोई नहीं ढँक सकता।"[४] इस पर बिरसा अपनी माता को वचन देते हैं कि वह इस धरती का आबा बनेंगे। आबा का अर्थ यहाँ भगवान से है। वह कहते हैं कि वे मुंडाओं के लिए अपने प्राण देने को तैयार हैं। जब आदिवासी समाज में बीमारी फैलती है, तो बिरसा उन्हें दवाइयाँ और उपचार बताता है। उनके साहस, ज्ञान और सेवा भाव के कारण आदिवासी समाज धीरे-धीरे उन्हें अपना आबा (भगवान) मानने लगता है।

बिरसा मुंडाओं के अधिकारों की रक्षा और अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष की पूरी योजना बनाते हैं। वे अपने साथियों को निर्देश देते हैं, "बताऊँगा... कब लड़ाई शुरू होगी, जल्दी ही बताऊँगा... गाँव-गाँव में तीर भेज दो। जितने हो सकें तीर बनाओ और हर गाँव में भेज दो। पहले हथियार जमा करो, फिर मैं हर गाँव को सन्देश भेजूँगा। जब पत्ता भेजूँ, लोग समझें कि मैंने धर्म के काम के लिए बुलाया है, और जब तीर भेजूँ, तो लोग समझ जाएँ कि लड़ाई के लिए बुलाया है।"[५] बिरसा गाँव-गाँव जाकर अपने आदिवासी भाइयों को लड़ाई की योजना बताते हैं। वे कहते हैं कि कोई अंग्रेजों को लगान नहीं देगा, कोई महाजन से कर्ज नहीं लेगा, चायबगानों में कोई कुली नहीं बनेगा, और कोयला खानों में कोई दम नहीं तोड़ेगा। उनकी स्पष्ट शिक्षा यह है कि जंगल हमारा है और केवल हमारा राज होगा। जमींदार, महाजन और अन्य शोषक जंगल से हटाए जाएँ। बिरसा के नेतृत्व और रणनीति के कारण कई स्थानों पर अंग्रेजों पर सफल हमले होते हैं। जब अंग्रेज बिरसा को पकड़ने का आदेश देते हैं, तो धानी कहती है, "वे लोग भगवान को खोज रहे हैं। पर क्या भगवान को खोज पाना इतना आसान है? हम लोग जन्म-जन्म तक राह निहारते रहे, तब मिले भगवान। वे पूरे जंगल में कुत्तों की तरह फैल गए हैं ताकि भगवान को खोज सकें।"[६]

मानमारू और जरीकेल मुंडा अंग्रेजों की चालाकी और लालच के द्वारा बिरसा मुंडा को धोखे से पकड़ लेते हैं। बिरसा को छुड़ाने के लिए जंगल के अनेक लोग इकट्ठा हो जाते हैं और मुंडा समाज उनकी रक्षा के लिए एकजुट होता है। इसके बावजूद बिरसा पर मुकदमा चलाया जाता है। उनकी लोकप्रियता और जनसमर्थन देखकर अंग्रेज उन्हें कोठरी में ही ९ जून, १९०० को जहर देकर मार देते हैं। बिरसा मुंडा अपने आदिवासियों, अपनी मातृभूमि और अपने देश के लिए संघर्ष करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देते हैं। नाटक का समापन गायन के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया गया है—

"धरती आग की लपटों में
लपटें हैं जीभ निकाले
असहाय काँपता देश हमारा
जौसे पत्ते काँपें
अँधियारे में छिपा देश
आठों कोने खोजो
तुम उगो सूर्य के जौसे जन जन में
तुम आँधी बनकर गरजो हर वन में।"[७]

इससे यह स्पष्ट होता है कि बिरसा मुंडा के निधन के बाद भी आदिवासियों में उनकी दिव्यता और

प्रेरणा की भावना बरकरार रही। लोग उन्हें भगवान मानते हैं और विश्वास करते हैं कि वह पुनः जन्म लेंगे। नाटककार ने बिरसा मुंडा के जीवन और संघर्ष को प्रस्तुत कर आदिवासी युवक के मातृभूमि और समाज के प्रति अदम्य साहस का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

नाटक में बिरसा के संवादों और कर्मों के माध्यम से उनके राष्ट्रप्रेम और नेतृत्व की झलक मिलती है। 'धरती आबा' नाटक में बिरसा मुंडा का चरित्र-चित्रण उनके नायकत्व और मनुष्य के मुक्ति संघर्ष का धवल प्रतीक है। भारतीय इतिहास के दृष्टिकोण से बिरसा मुंडा का व्यक्तित्व न केवल आदिवासी समाज के लिए, बल्कि समग्र समाज के लिए भी प्रेरक और भविष्योपयोगी है।

निष्कर्ष:

१. हृषीकेश सुलभ एक प्रतिभाशाली एवं बहुआयामी साहित्यकार हैं, जिन्होंने हिंदी रंगमंच और साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
२. 'धरती आबा' नाटक के माध्यम से उन्होंने पाठकों और दर्शकों तक राष्ट्रीय चेतना और आदिवासी समाज के संघर्ष की आवाज़ प्रभावशाली ढंग से पहुँचाई है।
३. बिरसा मुंडा के चरित्र के माध्यम से नाटककार ने राष्ट्रप्रेम, मातृभूमि के प्रति निष्ठा और अपने लोगों के प्रति गहन स्नेह की भावना का सजीव चित्रण किया है।
४. नाटक की भाषा और संवाद न केवल भावनाओं का संप्रेषण करते हैं, बल्कि नाटककार के विचारों और संदेश को सीधे पाठकों तक पहुँचाने का कार्य भी करती है।
५. 'धरती आबा' नाटक रंगमंचीय दृष्टि से भी परिपूर्ण है, जिसमें प्रस्तुति और संवाद दोनों ही सशक्त रूप से समन्वित हैं।
६. बिरसा मुंडा का चरित्र-चित्रण और उसका नायकत्व मनुष्य के मुक्ति संघर्ष का धवल प्रतीक प्रस्तुत करता है।
७. भारतीय इतिहास के दृष्टिकोण से बिरसा मुंडा का व्यक्तित्व न केवल आदिवासी समाज के लिए, बल्कि सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरक और भविष्योपयोगी है।
८. नाटककार ने बिरसा मुंडा के जीवन संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर यह उदाहरण दिया है कि एक आदिवासी युवक अपने मातृभूमि और अपने लोगों के लिए अंग्रेजों के शोषण के खिलाफ साहसिक संघर्ष कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

१. सुलभ हृषीकेश, धरती आबा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, तृतीय संस्करण - २०१९, पृ. क्र. १७-१८
२. वही पृ. क्र. २३
३. वही पृ. क्र. २६
४. वही पृ. क्र. ३५
५. वही पृ. क्र. ४६
६. वही पृ. क्र. ८७
७. वही पृ. क्र. ९६